10/02/2022

Dr. Keerti Kumar,
Assisting Guest Teacher,
Deptt of Psychology,
S.R.A.P. College Barachakia,
Motihari - East Champaran, Bihar
(A Constituent Unit of B.R.A. Bihar University, MFP)

Subject — Psychology - Educational
Topic — Introspective Method.
Period — 3rd (B.A. Part II)
Day — [illegible]
Date — 10/02/2022
Contact no — 9801666117 / 8540943704

———x———x———x———x———x———

(iii) अन्तर्निरीक्षण विधि के दोष :- इसके विपक्ष में कभी-कभी यह तर्क दिया जाता है कि इसमें एक ही व्यक्ति को अनुभवकर्ता और निरीक्षक - दोनों का ही कार्य करना पड़ता है और यह दोनों परस्पर एक दूसरे का विरोधी है। अतः एक ही व्यक्ति के अनुभवकर्ता और निरीक्षक - दोनों ही भाग लेने से तार्किक दोष हो जाता है।

(iv) इस विधि की प्रधान आलोचना यह है कि इसका प्रयोग सभी तरह के प्राणियों पर सम्भव नहीं है। बच्चे या पशु इस विधि का प्रयोग नहीं कर सकते। अतः इसका उपयोग अन्य विधियों की तुलना में अत्यन्त सीमित है। वास्तव: अन्तः निरीक्षण का प्रयोग चाहे ही कर सकते हो यद्यपि इस विधि के उपयोग का क्षेत्र सीमित है। इसकी सहायता से अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन हुआ है। वास्तव में अन्तर्निरीक्षण विशेषतः मनोविज्ञान की एक उपयोगी विधि है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

2. निरीक्षण विधि - Observation Method :- निरीक्षण विधि को प्रेक्षण विधि भी कहते हैं। अन्तर्निरीक्षण विधि के द्वारा स्वाभाविक परिस्थिति में होने वाले व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। अतः निरीक्षण विधि को मनोविज्ञान में प्रमुख स्थान देने का श्रेय

व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों के हैं। निरीक्षण की प्रक्रिया में चार स्थिति
1. ध्यान - Attention-
2. संवेदना - Sensation-
3. प्रत्यक्षीकरण - Perception
4. संकल्पना - Conception.

एक सफल निरीक्षणकर्ता के उपयुक्त चार बातें होना आवश्यक है। प्रभावी निरीक्षण के लिए ध्यान का होना अति आवश्यक है। ध्यान से सतर्कता की प्राप्ति होती है। संवेदना से तात्पर्य आन्तरिक एवं बाह्य परिवेश का व्यक्ति की इन्द्रियों से होने वाला ज्ञान है। प्रत्यक्षीकरण में संवेदना को अर्थ या बोध प्रदान किया जाता है। जिससे संकल्पना की सहायता से प्रत्यक्षीकरण आधिक उत्तम होजाती।

निरीक्षण के प्रकार :- अनेकों प्रकार के होते हैं

1. औपचारिक निरीक्षण :- इस विधि के नियंत्रित परिस्थितियों में व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है।
2. अनौपचारिक निरीक्षण :- इसके अन्तर्गत बिना किसी पूर्व निश्चित योजना के व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है।
3. आकस्मिक निरीक्षण :- Incidental Observation:- इस प्रकार में निरीक्षणकर्ता आकस्मिक रूप से ही व्यवहार का निरीक्षण करता है। जब बालक के व्यवहार का निरीक्षण बिना उसकी जानकारी के किया जाता है तब वह निरीक्षण आकस्मिक निरीक्षण कहलाता है।
4. व्यवस्थित निरीक्षण :- Systematic Observation:- इसके अन्तर्गत निर्धारित योजना के अनुसार व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है। इस विधि को आधिकाधिक विश्वसनीय, सफल तथा प्रभावी बनाने के लिए अनेक प्रकार के साधनों को एकत्रित किया जाता है और उसके बाद इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

Dr. Keerti Kumar
Asst. Prof., Deptt. of Psychology,
S.R.A.P. College, Bara chakia, East champaran,
Motihari, Bihar
(A constituent Unit of B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur)

Subject - Psychology (Educational)
Topic — Role of Motivation in learning
Date - 10/02/2022
Day - Thursday
Period - 3rd (B.A. Part I (Hon)
Contact No — 9801466113, 8540943704

Q. Role of Motivation in learning - Explain it.

Answer: - शिक्षण जीवन की एक महत्वपूर्ण क्रिया है। उसके द्वारा जीवन के परिवर्तन और परिमार्जन होता है। जीवन में बहुत सारी समस्याएँ आती हैं। जिससे व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता और समायोजन करता है। शिक्षण के द्वारा जो व्यावहारिक विचार है, जो जीवन में प्राप्त है उनको परिवर्तन होता है। और परिस्थिति के मुताबिक व्यवहार प्रदर्शन करने की कला शिक्षण के माध्यम से आती है। शिक्षण क्या है? इस सम्बन्ध में अनेक विचार हैं। जिनमें एकरूपता नहीं है। शिक्षण क्रिया की विशेषताओं पर प्रकाश नहीं पड़ता है। जैसे सीखने में कुछ लोगों ने व्यवहार का परिवर्तन माना है, कुछ लोगों ने शिक्षण को नये कौशल को अर्जन माना है। लेकिन ये सारे विचार शिक्षण के विषय में अधूरे हैं।

Skinner ने सीखने के विषय में कहा है कि "Learning is process of progressive behaviour adaptation" अर्थात व्यवहार के अर्जन में होने वाले परिवर्तन प्रक्रिया को शिक्षण कहते हैं। वस्तुतः शिक्षण कुछ-न-कुछ अर्जित होता है। क्योंकि अर्जन से हमारे शिक्षण में व्यवहार की प्रगतिशील परिवर्तन होता है। औ मादक द्रव्य का सेवन करते हैं उसमें भी परिवर्तन होता है। लेकिन उस परिवर्तन से हमें कोई लाभ नहीं होता है। और प्रगति का कोई मार्ग नहीं तय होता है। इसलिये जीवन में जो कुछ भी परिवर्तन होता है। उनसे जीवन को लाभ मिलता है। इसलिये उस परिवर्तन को सीखना नहीं कहेंगे। जिस प्रकार के शिक्षण से हमारा लक्ष्य पूरा होता है और हमें सामाजिक स्वीकृति मिलती है। इसलिये यह प्रगतिशील परिवर्तन और इससे समायोजन करने में आसान मिलता है। तभी तो Mc. Geoch ने शिक्षण के विषय में कहा है "Learning as we measure it, is a relatively permanent change in Behaviour

Ajanta PRODUCTS Officer

is a function of practice in most change and in the change as a direction which satisfy the current motivating condition of the individuals."

अर्थात सीखना व्यवहार में वह परिवर्तन है जो अभ्यास की देन होती है। और जो व्यक्ति की किसी स्वयं उद्देश्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को प्रेरित करती है।

शिक्षण में प्रेरणा का काफी महत्व होता है जितने भी सीखने के सिद्धान्त हैं जैसे कि Thorndike से लेकर Hull से, सभी ने प्रेरणा को सीखने के लिए आवश्यक माना गया है। प्रेरणा को शिक्षण सिद्धान्तकारों ने सीखने के लिए "fore front" में लाकर यह बतलाया है कि प्रेरणा शिक्षण का एक स्वाभाविक [illegible] है। कहा भी गया है :-

"Motivation is conductive factor of learning."

Kelley ने प्रेरणा को शिक्षण के आवश्यक रूप का स्पष्ट किया है और कहा कि जब तक शिक्षण में प्रेरणा का महत्व नहीं रहता है तब तक प्रभावकारी शिक्षण सम्भव नहीं है। Thorndike ने भी अपने Law of effect में प्रेरणा के महत्व को स्वीकार किया और लिखा है → "~~Satisfactory~~ Satisfying status of affairs are stamped in."

अर्थात संतोषजनक व्यवहार को सीखने वाला धारण करता है और व्यवहार में लाता है। Kelley ने लिखा है कि - learning manage करने के लिए motivation आवश्यक है। उन्होंने Kelley लिखा है "Motivation is a central factor in the effective management of the process of learning."

प्रेरणा शिक्षण में Youth [illegible] के बिन्दु हैं। Hull ने अपने Re-enforcement को सीखने का एक आवश्यक तत्व माना है। Skinner ने भी Reward को इसका [illegible] स्वीकार किया है। इस तरह जो भी शिक्षण विधि के सम्बन्ध में चिन्तन और दृष्टिकोण हैं सभी ने प्रेरणा को सीखने का एक आवश्यक तत्व माना है। प्रेरणा के सम्बन्ध में प्रयोग भी हुए हैं जिसमें Murlock, Tolman, Buhler, Thordike आदि के प्रयोग उल्लेखनीय हैं। Tolman और Murlock ने यह बताया है कि प्रेरणा को कई रूपों में Introduce करते हैं। वे स्वयं इस प्रकार हैं।